अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

"रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के काव्य में अस्मितामूलक विमर्श"

डॉ. रवींद्रनाथ मधव पाटील

सहयोगी प्राध्यापक हिंदी

डॉ. खत्री महाविद्यालय तुकूम चंद्रपुर

गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली.

email-ravindranathpatil5 @gmail.com

सारांश

भारतकी आजादी के लिये स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी, समाजसुधारक, साहित्यकार, पत्रकार तथा सामान्य जनता कात्यागरूपी सक्रिय सहभाग रहा हैं। अनेक हिंदी साहित्याकारो ने साहित्य की विविध विधाओ द्वारादेश की स्वतंत्रता के लिये जन जागृती, और जनसहभाग औरअपना सर्वस्व निछावर किया। ऐसे ही देशभक्ति से ओतप्रोत ओजस्वी कवि रामधारीसिंह दिनकर थे। इन्होने स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारत की प्राचीन सांस्कृतिक गरिमा का उद्घोष कर जनता में नवचेतना और उत्साह भरा। जोअपने हिम्मत और जिंदगी निबंध मेंकहते है"कि साहस की जिंदगी सबसे बडी जिंदगी होती हैं"।दिनकर जी के काव्य में निराशा और दुखः के स्थान पर आशा, उमंग,नवचेतना और मानवीय अस्मिता का स्वर अधिक दिखाई देता हैं। इनके काव्य में अतीत की गौरवगाथाऔर वर्तमान की अनेक समस्याओं का समाधान भी हैं। इनके साहित्य रचना की भाषा सुबोध, सरल हैं, अभिव्यक्ति निपट स्पष्ट हैं। साथ ही इनके काव्य साहित्य में अभिष्ट चिंतन भरें विचारों की व्यापकता तथा मानोभावों की तीव्र गहराई हैं| जिससे इनका काव्य समादृत, एवं अनुकरणीय बना है। इसमे मानवीय अस्मिता के दर्शन अनायास होते हैं। जीवनयापन करते समय जनसामान्य को जिसकी बहुत जरुरत होती हैं। जिसका संरक्षण, संवर्धन एवं कियान्वयन एवं निरंतर विकास करते रहनामानव का परम कर्तव्य हैं।जोमानव को आजीवान उप;उपयोगी होता है।जिसेदिनकर जी के अपने काव्य साहित्य में उजागर किया हैं|

प्रास्ताविक

स्वतंत्र भारत में जब युवां साहित्यकार छायावादी काव्य रचना में व्यस्त थे उस समय दिनकर जी ने नवयुग की पुकार सुनी और एक नये युग की, नई जागृती की और नव चेतना की आवाज बनकर भारतीय जनजीवन को अपने काव्य और साहित्य द्वारा नयी प्रेरणा और नव उत्साह प्रदान करते रहे। जिसे इन्होने अपनी हिमालय कविता में हिमालय के माध्यम से एक और भारतवर्ष की गौरवमयी प्राचीन परम्परा का उल्लेख किया हैं तो दुसरी और

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

भारतवासियो को देश की आजादी पर मर मिटने का आव्हान किया हैं। साथ ही कविता की पुकार में स्वप्न नगर की कल्पना शीलता को छोडकर काव्य को वास्तविकता की और लाया हैं। ग्रामीण वातावरण का चित्रण किया हैं। प्रकृति चित्रण भी हैं। जो अपनी और मानव की अस्मिता को अबाधित रखना चाहती हैं। जनतंत्र का जन्म कविता में जनता के लिये सिंहासन खाली करो अब जनता राज सिंहासन पर बैठ्ने वाली हैं। मानवीय अस्मिता की जागृती को उजगर किया हैं। चांद और कवि कविता में कवि मानव के रूप में चांद को यह कहता हैं कि मुझमें अपनी कल्पना को साकार बनाने और यथार्थ में परिणित करने की भी सामर्थ्य हैं। वन फुलों की ओर कविता में किसान की दयनीय अवस्था, कर्ज की मार आदि का वर्णन करते हुएमानव में अस्मिता की चेतना को प्रज्वलित रखना चाहते हैं। अभिनव मनुष्य कविता द्वारा भी मानव का अब्रतक का विकास बताकर उसकी अस्मिता को जागृत करना चाह ते हैं। कलम और तलवार कविता द्वारा युद्ध का मार्ग छोडकर बौद्धिक विकास की अस्मितामयी चेतना को प्रज्वलितरखना चाहते हैं। इनके सबंध में "डॉ. सावित्री सिन्हा ने लिखा हैं कि दिनकर जी की काव्य चेतनाअभाव से भी भाव, निबंध से स्वीकृति, निवृत्ति से प्रवृत्ति, दिवस्वप्नो से चिंतन और कल्पना से कर्म की और अग्रसर हुई हैं। अत: इनके भाव लोक की परिधि काफी बृहत्तर हैं।'' यही इनके काव्य और गद्य साहित्य की अस्मिता है। जिसका मानव के सर्वांगीण जीवन के संदर्भ में अस्मितामुलक विमर्श करना हमारा प्रयास है।

बीज शब्द KEY WORD

प्राचीनता, स्वतंत्रता, वास्तविकता, साहित्य सृजन,अस्मिता, जनचेतना, सर्वांगीण विकास

दिनकर जी का साहित्यिक परिचय

काव्य,अर्थातकविता हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है ।जिसका प्रचलन प्राय: प्रत्येक भाषा में गद्य की अपेक्षा पहले ही हुआ है। बाद में आधुनिक काल में गद्यसाहित्य का अनेक विधाओं सृजन हुआ । हिंदी साहित्य इतिहास के अध्ययन की सुविधा से हिंदी साहित्य को आदिकाल, पूर्व-मध्य-काल अथवा भक्तीकाल, उत्तर-मध्य काल अथवा रीतिकाल और आधुनिक काल आदि रूपों में सन १००० से अबतक के समयावधी में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने विभाजित किया गया हैं ।रामधारी सिंह "दिनकर" आधुनिक काल के १९०९-१९७४ की समयावधी के छायावादके, बचपन में ही कविता रचना आरंभ करने वालेचिंतन की अधिकता से युक्त,भावुकतापरिपूर्ण. ओजस्वी कवि थे।"छायावादी काविये की उससमय भारी कटू आलोचना हुई परंतु आज यह निर्विवाद तथ्य है की आधुनिक हिन्दी कविता की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धी इसी समय इन काविये द्वारा हुई। " १जिससे स्पष्ट होता है किरामधारीसिंह दिनकर जी का साहित्यिक योगदान देखकर दिनकर जी हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ काविये की पंक्ती में गिने जाने योग्य है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

दिनकर जी सन १९३४ में बिहार सरकार के सहाय्यक रजिस्ट्रार, राज्य सभा के सदस्य. १९५० में मुज्फ्फरपूर कालेज में हिंदी विभाग के अध्यक्ष भी रह चुके है।इन्हें भागलपूर विध्वविद्यालाय से डी. लिट. संस्कृ ति के चार अध्याय पर साहित्य अकादमी से पांच हजार का पुरस्कार मिला. "उर्वशी" पर एक लाख रुपये का भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार भी प्राप्त हूआ।भारत सरकार ने इन्हें साहित्य क्षेत्र की पद्मभूषण उपाधि से अलंकृत किया है।इसप्रकार इन्हें हिंदी का बहु सम्मानित कवि कहा जा सकता हैं।जिनके १३ से अधिक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं| इसके अलावा कुछ कविता संग्रहो का अनुवाद हो चुका है|पद्य लेखन में भी इन्होने लघुकथा, निबंध, आलोचना, सांस्कृतिक इतिहास, यात्रा वृतांत आदि विधाओं में विस्तृत लेखन कार्य किया है।प्रेरणा रूप में मानव को अभिनव मनुष्य कविता द्वारा कहा है कि" किंतु, नर चाहिये नित विघ्न कुछ दुर्जेय,सोचने को और करने को नया संघर्ष, नव्यजग का क्षेत्र पाने को नया उत्कर्ष।"

भारतीय गौरवमयी प्राचीन परंपरा और क्रांती के कवि

कवि हिमालय कविता में हिमालय को संबोधित करते हुए कहते हैं, कि

युग युग अजेय, निर्बंध, मुक्त,
युग युग गर्वोन्नत, नित महान,---------

इन पक्तीयों में कवि कहते हैं, कि हे मेरे विशाल नगपती, नगाधिराज ! तुम अनेक युगों से सर्वथा अजेय, बंधनहीन और मुक्त बनें हुए हो। तुम सर्वथा महान बनें रह कर अनेक युगों से गर्व से उन्नत बनें हो और अनंत आकाश में अपनी महान महिमा का चंदोवा तूम कितने ही युगों से तान हुए हो। हे मुनिश्रेष्ठ ! यहाशांत चुपचाप पडे तुमने कैसी चीर-समाधि ग्रहण की है अथवा यह कैसा ध्यान लगा रखा है। क्षणमात्र के आंखे खोलकर देख ! आज तेरे चरनों पर पडा हुआ हमारा यह भारत देश अनेक प्रकार की लपटों में जलता हुआ व्याकुल होकर तडप रहा हैं।

भारत देश की समृद्धी का गौरव करते हुए कवि कहते हैं, कि

सुखसिंधू, पंचनद, ब्रह्मःपुत्र, गंगा ---------विगलित करुणा उदार। कवि कहते हैं, किसुख के सागर सदृश पंजाब की पांचो नदिया तथा ब्रह्मपुत्र, गंगा, जमुना आदि की अमृत के समान जल की धारा हमारी इस पुण्यभूमि भारतवर्ष की और तुम्हीं में से निकलकर बह रही हैं। लगता हैं कि जैसे यह तुम्हारी अत्यंत उदार करुणा हैं जो बर्फ के समान पिघलकर बह रही हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

पराधीनता के दिनों में दिनकर जी ने “हिमालय” के बहाने से देश के नवयुवकों को गुलामी की जन्जीरें तोड फेकनें के लिये ललकारा था।

ले अंगडाई. उठ ----------रे. तपी/आज तप का न काल।

नवयुग शंखध्वनी जगा रही तू जाग, जाग, मेरे विशाल।

दिनकर जी के काव्य में यथार्थ ग्रामीण धरातल एवं उपेक्षितो के प्रती सहानुभूति

दिनकर जीका जन्मगाव में होने के कारण, गाव की हरी-भरी प्रकृति, लहराते हुए धान खेत, गदराई गंगा और अल्हद किशोरीयो को भी बडी सहृदयता से कलमबद्ध किया, व्यावहारिक जीवन में“दिनकर” की सहानुभूती दोनों उपेक्षितो के प्रती हैं। वह खेतों की उपज को वास्तव में उन्हि के श्रम का प्रतिफल मानता हुआ अपनी कविता की पुकार में उन्हें सह्लाने को कहता हैं।

सुखी रोटी खाएगा जब कृषक खेत में धरकर हाल, तब दुंगी मैं तृप्ती उसे बनकर लोटे का गंगाजल ।उसके तन का दिव्य स्वेदकन बनकर गिरती जाऊंगी, और खेत में उन्हि कनों से मैं मोती उपजाऊंगी ॥

अब स्वप्न नगर की कल्पना-शीतलता की छोडकर काव्य को यथार्थ की धरातल पर आने की आवश्यकता हैं । वन फुलो की ओर काव्य में अधिकतर प्राकृतिक सौदर्य एवं गहरी भाव संवेदना हैं ।प्रसंगानुरूप कविता ग्राम्य वातावरण मे अत्याधिक रमती हैं। तत्संबंधी उत्कृष्ठ प्रकृति-चित्रण कवि ने प्रस्तुत किया हैं। लेकिंन वह भी यथार्थ की धरातल से हटकर नही जैसे-

नालंदा-वैशाली में तुम रुला चुके सौ बार, धूसर भुवन स्वर्ग-ग्रामो में कर पाई न विहार

कवि कहते है कि तुम मुझे नालंदा और वैशाली की करूण गाथा का गान कर सैकडो बार रुला चुकें हो। मैंनें आज तक पृथ्वी पर के स्वर्ग समान इन धूली-धुसरित गावों में कभी विचरण और आमोद-प्रमोद नहीं पाई। अत: हे कवि ! आज राजसी ठाट-बाट से युक्त राजमहल की बगिया को छोड दो और जगत के फुलों की शोभा देखने के लिये चलो।

विदुत छोड दीप साजुंगी, महल छोड तृन-कुटी-प्रवेश, तुम गावों के बनों भिखारी, मै भीखारिणी का लुं वेश

आज मैं बिजली के जगमग प्रकाश को छोडकर मिट्टी के दीपक सजाउन्गी और राजमहलों का वैभव त्याग कर घास-फूस की झोपडी में जाकर रहना चाहति हुं। हे कवि, तुम भी गाव के भिक्षुक बन जाओ और मैं तुम्हारे साथ भिखारीन का वेश धारण कर लुं। दिनकर जी के कृषी विषयक विचारो के सबंध में सावित्री सिन्हा जी कहती हैं कि

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

दिनकर के व्यक्तित्व में धरती-पुत्र का आत्मविश्वास और दृढता हैं। साहित्यकार की अनुभूति प्रवणता, दार्शनिक का तत्व चिंतन तथा राजपुरुष का ओज और तेज हैं।**२**

भाव लोक की बृहत्तर परिधि

दिनकर जी का रश्मीरथी महाकाव्य भावपूर्णहैं। इसमें मानवीय संवेदना के उस विरल प्रश्न को उठाया गया हैं जो प्राचीन काल से लेकर आजतक विश्वमानस मानता चला आ रहा हैं।

मां ने बढ कर जैसे ही कंठ लगाया,हो उठी कंटकित पुलक कर्ण की काया। पहली वर्षा में मही भिगती जैसे
भिगता रहा कुछ काल कर्ण भी वैसे।

कुरुक्षेत्र के प्रथम सर्ग में कवि ने युद्ध के इतिहास का वर्णन करते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया हैं कि युध्द के दुश्परीनामो का प्रभाव सभी पर पडता हैं। जो प्रसंग हर मानव के मनोभावों को उद्वेलीत करता ही हैं।

वह कौन रोता हैं वहा- इतिहास के अध्याय पर, जिसमें लिखा हैं, नौजवानो के लहू का मोल है प्रत्यय किसी बुध्ये,
कुटील नितीज्ञ, के व्याहार का ;जिसका हृदय उतना मलीन जितना की शीर्ष वल्क्ष हैं;जो आप तो लड्डता नही
कटवा किशोरो को मगर, आश्वस्त होकर सोचता, शोणित वहा, लेकिन, गयी बच लाज सारे देश की ?**३**

जनता की आवाज, चेतना

कवि दिनकर जी आजादी की चाहत , जनता की आवाज, लोकतंत्र की महत्ता के संबंध में अपनी कविता **जनतंत्र का जन्म** में सदियो से ठडी बुझी हुई आग अचानक सुलग उठी। साथ में मिटटी सोने का मुकुट पहन करइतराती हैं। समय में देखो परिवर्तन आयाहैं। जनता जागी उसकी आवाज हर जगह सुनाई दे रही हैं। सिंहासन खाली करो अब जनता ही उस पर बैठेगी। जनता को अब राज्य करने दो। जनता अपने अधिकारो का उपयोग करेगी। किसान और मेहनतकश हमारे देवता है। जनता में निहित शक्तिको समय भी नही रोक सकता। जनता जैसा चाहती हैं काल/समय भी उधर ही मुडता है। इस प्रकार कवि लोकतत्र का समर्थन करते हैं। जिसमे सभी जनता का हीत निहित हैं। जिसके संबध में **संविधान निर्माता डॉ बाबासाहेब आंबेडकरजी** के विचार बहुत की समर्पक हैं –"" हमारा यह महान कर्तव्य हैं कि हम जनतंत्र को जीवन-सम्बन्धो के मुख्य सिद्धांत के रूप में संसार में से समाप्त न होने दे। यदि हम जनतंत्र में विश्वास करतें हैं तो हमें उसके प्रति सच्चा एवं वफादार होना चाहीयें। वरना हम जो कुछ भी करें हमें जनतंत्र के मुल सिद्धांत, स्वतंत्रता और भातृत्व का अंत करने में सहायता नहीं कारनी चाहिये।""**४**जनतंत्र के संबंध में कहते हैं कि ""जनतंत्र वह सरकार कि व्यवस्था-रूप एवं विधि हैं- जिसके द्वारा जनता के सामाजिक और आर्थिक जीवन में खून-खाराबें के बिना परिवर्तन लाये जाते हैं।""**५**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

मानव अस्मिता

''चांद और कवि'' कविता में कवि मानव अस्मिता की बात करता हैं चांद से कहता हैं किहे चांदतू क्या वास्तव में मुझे जाणता हैं, क्या स्वप्न, कल्पना ही मेरा जीवन समझता हैं क्या मेरे जीवन में पाणी रुपी समरसता और मधुर कल्पना का ही स्थान हैं, मै उनमें से नहीं हूं जो स्वप्न को सत्य मान लेते हैं मैं स्वप्नों को गलाकर लोहे के रूप में परिवर्तीत कर लेता हूं और उसपर भी अपने काव्य रुपी नवीन भवन की निव राखकर उसकी दिवारें और भी फौलादी बनाता हूं। तेरे सामने जो खडा हैं वह मनु पुत्र मानव है जिसकी कल्पना की जबान में भी तिखी धार होती हैं। उसके पास केवल विचार रुपी बाण ही नहिं होते, अपितु कल्पना के हाथों में भी तलवार होती हैं अर्थात मानव में कल्पना को साकार बनाने और यथार्थ में परीणीत करने का सामर्थ्य भी हैं।

मानव जीवन में बुद्धी का महत्त्व

दिनकर जी "कलम और तलवार" कविता में तलवार अर्थात शक्ति से भी अधिक कलम अर्थात बुद्धी को महत्व देते हुए कहते है कि, जिस देश में कलम की शक्ति होती हैं वह देश कभी पराजित नही हो सकता, वहा नर-नारी निर्भय हो कर जीवनयापन करते हैं, वहा अक्षर ही ज्ञान ही चीन्गारी, बारूद, बम, गोले का काम करती हैं।

कलम देश की बडी शक्ती है भाव जगाने वाली।दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली॥

एक भेद है और, जहा निर्भर होते -------
कलम उगलती आग, जहा अक्षर बनतें चिंनगारी।

जहा मनुष्यो के भीतर, हरदम जलते हैं शोले,
बाहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले। **६**

मानव की महानता एवं अभिनवता

कवि दिनकर जी ने कुरुक्षेत्र काव्य में "अभिनव मनुष्य" की महानता, मानव का विकास, मानव के अनेक कार्य आदि द्वारा संसार में मानव की श्रेष्टता सिद्ध करने का प्रयास किया है।

यह मनुज, जिसका गगन में जा रहा हैं यान, ----नव्य जय का क्षेत्र पाने को नया उत्कर्ष।

पर धरा सुपरीक्षिता, ----सब पृष्ठ जिसके खोल।

किंतु, नर प्रज्ञा सदा गतीशालिनी, उद्दाम ------चाहिये नर को नया कुछ और जग विस्तीर्ण।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

इस प्रकार संपूर्ण कविता में कवि दिनकर जी ने मानव की अभिनवता ,मानव की सृजनात्मकता,मानवकाचिंतन,मनन,क्रियान्वयन,त्याग,कार्य के प्रतिसमर्पणआदिसिध्द किया हैं।

निष्कर्ष

कवि दिनकर जी के काव्य का अध्ययन करने पर उनके कोमल, संवेदनशील हृदय के स्पष्ठ दर्शन होते हैं। समय रुपी काल का शायद ही कोई आघात हो जिसकी प्रतिक्रिया में उनका संवेदनशील हृदय फुट न पडा हों। दिनकर जी के काव्य में जीवन के प्रती स्वस्थ आस्था, उदात्त मानवता और लोकमंगल की भावना हैं। तथा अन्याय, अत्याचार, शोषण, जातीभेद, सभी प्रकार की विषमता के विरुद्ध बुलंद आवाज दिखती हैं। कवि ने अपने काव्य साहित्य में भाव व्यंजना को उत्कृष्टता प्रदान करने में, अपना सारा प्रयास लगा दिया हैं। इनके काव्य में भाषा का लचिलापण, पदलालित्य, शैली की स्पटता तथा प्रसाद गुन काव्य रचना में सहज स्वाभाविक रूप में आए हैं |कवि अपने काव्य द्वारा मानव में वैचारिकता का बीज बोना चाहते हैं, जिससे मानव में अपने प्रती, समाज के प्रती, परिवेश के प्रती चेतना, जागृती निर्माण हो जिससे सबका भला हो | दिनकर जी का काव्य साहित्य लोकमंगल की और अग्रेसर दिखाई देता हैं। जिस से पाठकों एवं छात्रों कों ज्ञान, सुख, समाधान एवं जीवन में संघर्ष एवं विकास करने कें लिए नयी प्रेरणा प्राप्त होती हैं।

संदर्भ

१.हिंदी काव्य सरिता-संपादक निर्मला गुप्ता-प्रकाशक युरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्रा. ली, रामनगर, नई दिल्ली -११००५५ पृष्ठ ii २.युगचरण दिनकर, सावित्री सिन्हा, संपादक-नेशनल पब्लीशिंग हाउस, नई दिल्ली ११००५५, संस्करण १९६३ पृष्ठ २२ ३.कुरुक्षेत्र, प्रबंध कविता, दिनकर, संपादक-राजपाल अंड संस, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली ११०००६, संस्करण २००६ पृष्ठ ०१

४.अम्बेडकरइज्म अर्थात अम्बेडकर दर्शन वाय. एम. बी. ए ग्रंथमाला-५, एल.आर. बाली, प्रकाशक-वाय. एम. बी. ए. प्रकाशन नागपुर संस्करण १९८५, पृष्ठ १२

५.अम्बेडकरइज्म अर्थात अम्बेडकर दर्शन वाय. एम. बी. ए ग्रंथमाला-५, एल.आर. बाली, प्रकाशक-वाय. एम. बी. ए. प्रकाशन नागपुर संस्करण १९८५, पृष्ठ ७२

६.साहित्य प्रकाश, पाठ्यपुस्तक, संपादक-हिंदी अभ्यास मंडळ गोंडवाना विद्यापीठ गडचिरोली, प्रकाशक राघव पब्लिशर्स अंड डीस्ट्री ब्युटर्स,नागपूर -३२प्रथम संस्करण २०१२ पृष्ठ ४२